Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

हिंदी कथा साहित्य में बाल मन में माता-पिता के अलगाव से उत्पन्न समस्याएँ

Dr. Sheena Prabhakaran*

Assistant Professor, Department of Hindi, St. Josephs College, Devagiri (Autonomous), Kozhikode, Kerala

सार - *बच्चों के हृदय में अपने घर की छवि 'आदर्श घर' की छवि तथा माता-पिता की छवि एक 'आदर्श दम्पत्ति' की छवि होती है किन्तु माता-पिता में आपसी द्वन्द्व, तनावों के चलते आखिरकार जब वे संबंध-विच्छेद की कगार पर आ जाते हैं तो निश्चित तौर पर बच्चों पर इसका दुष्प्रभाव पड़ता है। बच्चों के अवचेतन में परिवार के विभाजन से हुई क्षति की पूर्ति किसी प्रकार भी नहीं की जा सकती। यह एक ऐसी स्थिति है, दुर्घटना है जिस पर उनका कोई नियंत्रण नहीं, जिसमें उनका कोई हस्तक्षेप नहीं किन्तु सर्वाधिक निर्दोष होने पर भी सर्वाधिक दुष्प्रभाव और हानियाँ उन्हीं के हिस्से में आती हैं।*

---------------------------------X---------------------------------

ए. हार्लाक के अनुसार असहज दाम्पत्य संबंधों में पलने वाले बच्चों में निम्नलिखित सात प्रकार की मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाएँ होती हैं-

(1) माता-पिता दोनों से समान रूप से स्नेह होने के कारण होने वाला संघर्ष,

(2) बालक के हृदय में माता-पिता के तनावपूर्ण संबंधों के प्रति निरन्तर चलने वाली एक क्रिया-प्रतिक्रिया,

(3) बालक का प्रत्येक क्षण अपने पर एक बोझ का अनुभव करना और उसकी अपने पूर्व जीवन से तुलना करना,

(4) बालक का टूटे परिवार से सौतेले परिवार में संक्रमण,

(5) घर के वातावरण में पूर्णतया बदलाव से समंज्जन में कठिनाई,

(6) बालक द्वारा दोनों घरों के वातावरण में तुलना और

(7) माता-पिता के प्रति अवधारणा में परिवर्तन।[1]

निरन्तर बढ़ती हुई अहंवादी प्रवृत्ति, अति महत्त्वाकांक्षा, असहिष्णुता, प्रेम की ऊष्मा के अभाव तथा आपसी सामंजस्य की कमी के कारण आज परिवार रूपी इकाई में वह दृढ़ता नहीं रही उसमें दरार पड़ गई है। बच्चे माता-पिता दोनों के गहन संवेदनात्मक स्तर पर जुड़े हुए और अति संवेदनशील होते हैं। जीवन के प्रारंभिक चरण में ही माता-पिता के असहज अथवा असफल दाम्पत्य संबंधों के कारण बच्चे मानसिक, सामाजिक व सांवेगिक तनाव का शिकार होते हैं। उनके व्यक्तित्व, व्यवहार, चरित्र तथा सम्पूर्ण आगामी जीवन पर ऐसी स्थितियों का अत्यन्त गहन व नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। डॉ. हेरी0 एम0 जॉनसन का कथन है- "कोई भी यह नहीं सोचता कि प्रभावित बच्चों के लिए तलाक हितकर रहा? पर यह कोई नहीं जानता कि क्या अप्रसन्न और लड़ते रहने वाले माता-पिता के साथ रहने की तुलना में यह स्थिति और भी खराब है, न कोई यह भी जानता है कि बच्चे तलाक के कारण अत्यधिक यातना भोगते हैं अथवा उस संघर्ष से अधिक भोगते हैं जिसके कारण कि तलाक लिया गया।"[2]

वस्तुतः ऐसे अस्वस्थ पारिवारिक वातावरण के बीच पलने-बढ़ने बच्चे अनायास ही माता-पिता के आपसी संघर्ष में पिसते रहते हैं किन्तु उनके अलगाव या संबंध विच्छेद के बाद तो स्थिति और भी खराब हो जाती है। माता-पिता में से किसी एक का भी अभाव उसके व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करता है। माँ के दूर रहकर वह उसकी ममता, वात्सल्य, प्यार, दुलार और करूणा के अभाव में असामान्य व्यवहार करने लगता है वहीं पिता के अभाव में बच्चों में अपेक्षित आत्मविश्वास, अनुशासन और सुरक्षा का भाव नहीं जाग पाता। परिवार का टूटना उनके लिए दो हिस्सों में बंटने की भाँति है। अलगाव के पश्चात कई बार अभिभावक बच्चों का

www.ignited.in

इस्तेमाल एक दूसरे से प्रतिरोध लेने के लिए करने लगते हैं। वे बच्चों को एक जीवित और स्वतंत्र मानव इकाई मानने के बजाय एक 'शस्त्र' के रूप में उसका प्रयोग विपक्षी को नीचा दिखाने, अपमानित करने, अपना क्रोध, आवेश और क्षोभ व्यक्त करने के लिए करने लगते हैं, किन्तु इस घात-प्रतिघात में लहूलुहान होता है- बच्चा।

अधिकांशतः अलगाव के पश्चात ऐसे अभिभावकों में दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ दिखाई पड़ती हैं। या तो वे अपने बच्चों को पूर्णतः अपने संरक्षण से ढक लेते हैं, यहाँ तक कि उसे समवयस्क मित्रों में उठने, बैठने, खेलने तथा स्वतंत्रतापूर्वक कुछ भी करने से वंचित कर देते हैं अथवा इसके सर्वथा विपरीत कुछ अभिभावक उन्हें एकदम आत्मनिर्भर बनाने में जुट जाते हैं। अति संरक्षण ;व्अमत च्तवजमबजपवदद्ध के कारण बच्चों के व्यवहार में निम्नलिखित कठिनाइयाँ उत्पन्न हो जाती हैं-

(1) इस प्रकार के बच्चों का सामाजिक समायोजन अच्छा नहीं होता।

(2) उनमें पराश्रय की भावना बहुत बढ़ जाती है।

(3) आवश्यकता से अधिक अपने ऊपर ध्यान दिलाना चाहते हैं।

(4) छोटी-छोटी बातों से घबरा जाते हैं।

(5) उनकी इच्छा पूरी न होने पर आक्रामक हो सकते हैं।

(6) किसी भी कारण यदि उनकी उपेक्षा की गई तो वे सहन नहीं कर पाते क्योंकि उन्होंने हर स्थान पर उन्हें अपना एकछत्र राज्य चाहिये।[3] जबकि आवश्यकता से कम प्यार देने यानि अवस्नेह (under affection) और तिरस्कार बच्चों में मुख्य रूप से संवेगों की कमी हो जाती है। जिनको स्वयं कभी प्यार न मिला हो वे प्यार करना और प्यार देना नहीं सीख पाते। समय से पहले बच्चों को अत्यधिक परिपक्व बनाने के प्रयास के फलस्वरूप उनकी आत्मनिर्भरता अनात्मीयता में बदलने लगती है।

हिन्दी कथा साहित्य में माता-पिता के आपसी तनावों, अलगाव तथा सम्बन्ध विच्छेद के परिणाम स्वरूप बच्चों पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों तथा ऐसी स्थिति में उनमें उत्पन्न होने वाली मानसिक तथा मनोवैज्ञानिक समस्याओं पर बड़ी गहनता से विचार, विमर्श किया गया है। जैसे- 'करार पत्र' नामक कहानी में लेखिका एक मस्तमौला, होशियार व समझदार बच्चे निकलस को जब उत्तरोत्तर, गंभीर और एकाकी होते देखती है तो उसे यह अनुभूति होती है कि- 'माँ बाप के मतभेद, झगड़ों की आँच से निकलस का मासूम बचपन अब शायद झुलसने लगा था। एक उम्र तक बच्चों की जिंदगी माँ बाप की ममता से जुड़ी रहना, बच्चों की खुशी तथा शारीरिक मानसिक तन्दुरूस्ती के लिए जरूरी होता है। माँ बाप अपने स्वार्थ के लिए निजी मतभेदों की वजह से बच्चे को उसके अधिकार से, प्यार से वंचित रखें, यह कहाँ का इन्साफ है? माँ बाप अपना दायित्व, अपनी जिम्मेदारी भूलकर जीने लगे तो बच्चों की आशा-अपेक्षाएँ, उम्मीदें, सपने किसका मुख देखकर जियें।[4] जब वह निकलस ने मिलती है तो पाती है कि उसे पिता से बिछुड़ने का गहरा शोक है, उसने अपनी ओर से निवेदन के रूप में एक करारपत्र बनाया है जिन पर वह पिता के हस्ताक्षर चाहता है वह कहता है- "सच कहूं आँटी डैडी के बिना जीना बड़ा मुश्किल होगा। रोज़ उनके काम से लौटते ही उनके साथ कार में घूमने जाना, उनकी गोद में बैठकर कार चलाना सीखना, रात को उनके सीने पर सिर रखकर कहानी सुनना, उनके साथ खेलना, हराना, मस्ती करना। मैं सच में इन सबके लिए तरस जाऊँगा मैं अपने डैडी को मिस करने जा रहा हूँ।"[5] विश्व प्रसिद्ध रूसी शिक्षाशास्त्री अन्तोन माकारेंकों के अनुसार "पारिवारिक समूह की पूर्णता और एकता अच्छे लालन पालन के लिए एक अनिवार्य शर्त है। इसका विनाश निर्वाह खर्च अदा करने वाले बापों और इकलौते राजकुमारों से ही नहीं होता बल्कि माता-पिता के झगड़ों, पिताओं की निरंकुशता, क्रूरता और माताओं के छिछोरेपन की कमज़ोरी से भी होता है।"[6] इसी तथ्य को उजागर करते हुए 'दिलासा' नामक कहानी में दर्शाया गया है कि एक स्त्री द्वारा हर पाँच छह वर्ष बाद तलाक लेने और बार-बार विवाह मण्डप में बैठने की अनियंत्रित महत्त्वाकांक्षाओं ने बच्चों पर कितना भयानक प्रभाव डाला। उसकी पुत्री के बीस वर्ष की होने तक उसके जीवन में चार पुरूष आए। पुत्री के ये शब्द उसके भीषण अन्र्तनाद को स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं- "माँ की हर शादी में ऐसा लगा जैसे ज़िन्दगी, ज़िन्दगी न हो, कोई नौटंकी हो। नए शौक की, नए रिश्ते की खुशी उसकी होती है और दर्द मेरा।...नाटक के नए अंक की तरह माँ की नई शादी, मेरे नए डैडी, नया फर्नीचर, घर की नई सजावट, नए समझौते।"[7] यह एक ऐसी बालिका की कहानी है जिसने एक बार नहीं बार-बार अलगाव का दंश झेला किन्तु प्रथम पिता के प्यार, सहानुभूति और अपनत्व ने उसे असामान्य न होने दिया। वह कहती है- "अगर डैडी न होते, उनके साथ बातें करके जी हल्का करने का यथार्थ मेरी जिंदगी का अहम हिस्सा न होता

www.ignited.in

तो पिछले दस सालों में, मानसिक दृष्टि से अपने आप को तदुंरूस्त रख पाना शायद मुमकिन नहीं हो पाता।''[8]

इसी प्रकार 'ऑक्टोपस' नामक कहानी में पिता से अलग होने के बाद माँ के जीवन में कई पुरूष आते हैं जो बेटी को बिल्कुल अच्छे नहीं लगते- 'नीता ने दुस्साहसी होकर माँ से कहा था- ''मेरी सहेलियां इन अंकलों के बारे में न जाने क्या-क्या पूछती हैं....मुझे अब इस घर में किसी अंकल का आना पसंद नहीं।''[9] अब अपने और माँ के बीच बनती जाती शक की अभेद्य दीवार के कारण नीता को लगता है कि वह अपनी माँ को भी एक दिन खो देगी और अकेले एक अभिशप्त जीवन जीने को विवश होगी - 'वह तेजी से मुड़कर अपने कमरे में एक कोने में बैठ जाती है। यह जीवन....यह दुनियादारी, आने जाने वाले अंकल और उनसे बहता शक का वह ऑक्टोपस किसी दिन नीता को भी धर दबोचेगा और वह झटककर अपनी माँ से पापा की तरह दूर हो जाएगी।'[10]

एक बच्चे के लिए अपने माता-पिता दोनों के होते हुए किसी एक के बिना जीना बहुत दुष्कर हो जाता है। जहाँ एक ओर उसकी अन्तर्पीड़ा और दुख कम नहीं होता वहीं पग-पग पर समाज में मिलने वाली प्रताड़नाएँ, ताने, व्यंग्य भी उन्हें बेधते रहते हैं। कृष्णचन्दर की कहानी 'मेरे दोस्त का बेटा' में बच्चों की इसी पीड़ा को दर्शाया गया है। इसमें एक वेश्या को अपने प्रेमजाल में फँसाकर पुत्रवती करके कोई व्यक्ति सदा के लिए अन्यत्र चला जाता है। माँ तो पूर्ववत अपने धन्धे में रम जाती है किन्तु मासूम बच्चे को न ही पिता का संरक्षण मिलता है, न माँ का प्यार, न ही समाज में कोई सम्मानित दर्जा मिलता है। पिता के मित्र से वह बच्चा बताता कि गली में खेलते समय एक बच्चे ने उसे गाली दी कि तू रंडी का बेटा है। वह रोता हुआ घर आ गया और कहा- ''मेरी मम्मी तो अच्छी हैं वह रंडी नहीं हो सकती मेरे पापा रंडी होंगे। वह तो कभी हमारे घर नहीं आते। जरूर वह रंडी होंगे। मेरी मम्मी बोलती थी कि वह घर कभी नहीं आयेंगे। क्यों नहीं आयेंगे?''[11] उस चार वर्षीय बच्चे में अपनी इस असहाय अवस्था के कारण इतना तीव्र आक्रोश है कि मैगजीन के पन्ने उलटते समय उसे एक विज्ञापन में सुन्दर सा हँसता हुआ बच्चा दिखता है तो वह झट से कहता है- ''मैं इसका गला काट डालूँगा...बस काट डालूँगा।... यह मेरी तरफ देखकर हँसता क्यों है?'' लड़के ने धीरे से घृणा और क्रोध के मिले जुले भावों से कहा- ''यह मेरी ओर देखकर सदा हँसता है।'' चहक-चहक। लड़के ने एकदम चाकू से तस्वीर को दो-तीन जगहों से काट डाला। हँसते हुए बच्चे का चित्र जगह-जगह से फट गया।[12] यह दृश्य देखकर लेखक का हृदय भीतर तक हिल जाता है और वह उस बच्चे की कहानी लिखने के लिए विवश हो जाता है जिसके गले में अभी से फाँसी का फन्दा दिख रहा है। समाजशास्त्री डॉ. हेरी एम0 जॉनसन कहते हैं- ''हमारे समाज का तलाक का सबसे निकृष्ट पक्ष संभवतः यह है कि बच्चों को रखने का अधिकार बार-बार बँटता रहता है।....पास रखने के अधिकार का विभाजन होने से यह कहना कठिन है कि किस प्रकार एक बालक अपने को निष्ठा के संघर्ष से बचा सकता है।''[13]

'पीर पर्वत हो गई है' नामक कहानी में अपनी माँ के साथ ननिहाल में रह रहा रजत बेसब्री से माह के दूसरे इतवार का इन्तजार करता है क्योंकि 'कोर्ट के आदेश के मुताबिक यही एक दिन होता है जब रजत के पापा उसे आठ घंटे के लिए ले जा सकते हैं। मम्मी चाहे यह दिन भूल जाएँ पर रजत कभी नहीं भूलता। इतना सा है पर महीने के शुरू में ही उस तारीख पर गोल घेरा बना देता है और पहली तारीख से ही दिन गिनना शुरू कर देता है।'[14] ननिहाल में रात-दिन माँ बेटे को सबकी प्रताड़ना ताने, उलाहने मिलते हैं नन्हें से बच्चे को सब 'मरदूद', 'बला', 'बोझ' समझते हैं। अतः बच्चे के हित में माँ अपने हृदय पर पत्थर रखकर एक बहुत बड़ा फैसला लेती है कि रजत को उसके पिता के पास भेज देगी और पति से मिलकर यह शर्त रखती है कि वह अब उसकी उचित परवरिश व देखभाल करेंगे किन्तु प्रश्न यह उठता है कि क्या उसका इतना बड़ा त्याग भी वाकई उस बच्चे को सचमुच एक सुरक्षित छत, अच्छी परवरिश व माँ-पिता का प्यार दिला सकेगा। इसी प्रकार 'हथेली भर सुख' नामक कहानी में भी बच्ची ने सदा माता पिता को झगड़ते, चिल्लाते, माँ को बीमार पड़ते, बिना बताये घर से चले जाते ही देखा। इस बार बहुत दिनों से माँ लापता है और जब वह अपनी मौसी को देव अंकल से यह कहते हुए सुनती है कि पता नहीं अब उसकी माँ जीवित भी है या नहीं तो उसे बड़ा तीव्र आघात लगता है बाहर भी, भीतर भी- ''क्या? पत्थर की ठोकर लगी थी या अकस्मात सदमा उसके अँगूठे से खून बहने लगा था। मौसी और अंकल दोनों ही भागते हुए उसके पास आए। ''छीछालेदार हो गई लड़की की....माँ कहाँ हैं, पता नहीं और बाप को फुर्सत नहीं।''[15] कुछ समय बाद माता-पिता का अलगाव हो जाता है। वह माँ के साथ बहुत दूर आकर रहने लगती है फिर भी वह कभी प्रसन्न नहीं रह पाती बल्कि निपट एकाकीपन का शिकार होती है- 'घर से उजड़कर कैसा लगता है? क्या माँ के साथ वह भी टूट रही थी? समूची...। कितनी ही बार फ्लैट की छत पर अकेली खड़ी वह रोई थी। उसे आया, दीदी, पापा, अपना बंगला, बगीचा... सब कुछ याद आता है।...माँ के अलावा उसने भी कितने दुख सहे थे, दर्द जाना था। माँ जैसी वह खामोश होती जा रही थी। माँ की उदासियों से परिचित सी, कुछ समझती बूझती सी वह।[16] अन्ततः मरणासन्न माँ उसे पिता के पास भेज देना चाहती है और अब मनु के

www.ignited.in

सामने सबसे बड़ा प्रश्न है एक बार टूटकर पुनः टूटने का। वह पहले पिता से और अब माँ से अलग होने जा रही है।

एक अन्य कहानी 'एक दिन का मेहमान' में अलग हो जाने के वर्षों बाद पिता अपनी पत्नी और बेटी से मिलने आता है किन्तु बेटी को स्पष्ट तौर पर मालूम है कि माँ का उनके समक्ष आना, एक तूफान खड़ा कर देगा इसीलिए वह जोर लगाकर पिता को माँ से मिलने से रोकती है- "प्लीज पापा।" उसके पाँव ठिठक गए। "आप फिर उनसे लड़ना चाहते हैं?" लड़की ने कुछ गुस्से से उसे देखा। "लड़ना"। वह शर्म से भीगा हुआ हँसने लगा "मैं यहाँ दो हजार मील उनसे लड़ने आया हूँ?" "फिर आप मेरे पास बैठिए।... मैं तुम्हारे पास हूँ क्या यह काफी नहीं है?"[17] माता-पिता जब बच्चों के साथ हमेशा नहीं रहते तो वे उनके मनोजगत में होने वाले परिवर्तनों, उनकी परिपक्व होती बुद्धि तथा संवेदनाओं से सर्वथा अनभिज्ञ तथा असम्पृक्त रह जाते हैं। वे अपने बच्चों को केवल उतना ही जानते हैं जिस अवस्था में वे उन्हें छोड़कर गए थे। इस कहानी में लेखक का वक्तव्य है- "वे माँ बाप जो हमेशा अपने बच्चों के साथ नहीं रहते, उन गोपनीय मंजिलों के बारे में कुछ नहीं जानते जो उनके अभाव की नींव पर ऊपर ही ऊपर बनती रहती है। लड़की अपने बचपन की बेसमेण्ट में जाकर ही पिता से मिल पाती थी.. लेकिन कभी-कभी उसे छोड़कर दूसरे कमरों में चली जाती थी जिसके बारे में आदमी को कुछ भी मालूम नहीं था।"[18] आज पिता, पत्नी और पुत्री के बीच पुनः संबंधों की वही गर्माहट उत्पन्न करना चाहता है किन्तु कुछ बन नहीं पाता। नीरवता, चुप्पी, उदासी व अंधकार लिए बाहर के अंधकार में अन्ततः वह गुम हो जाता है।

वहीं एक अन्य कहानी 'नीड़ का निर्माण फिर फिर' में एक अपरिचित व्यक्ति के आने पर घर का वातावरण तनावपूर्ण हो जाता है उसके संबंध में पूछने पर पिंकी को सत्य नहीं बताया जाता, कहा जाता है कि वह पिता के रिश्तेदार हैं जबकि वही उसके पिता थे। किन्तु पिंकी के मन में पिता और उनके परिवार के प्रति गहरा वितृष्णा का भाव है- 'पिता के परिवार से पिंकी को जरा भी लगाव नहीं है बल्कि उन लोगों से उसे वितृष्णा सी हो गई है। जो व्यक्ति अपने बीवी बच्चों को छोड़कर विदेश चला गया है, यही नहीं वहाँ उसने अपना नया घर भी बसा लिया है- ऐसे व्यक्ति को पिता कहते उसे शर्म आती है। और जब पिता से ही कोई सरोकार नहीं रहा तो उसकी जायदाद की औकात ही क्या है। उसे किसी की खैरात नहीं चाहिए।[19] अन्ततः माता-पिता में सुलह हो जाती है और पूछने पर नानी पिंकी को समझाती है कि उसके लिए बाप कितना जरूरी है और सब कुछ उसके हित के लिए किया जा रहा है। उसकी स्मृति में पिता के लिए कोई आत्मीयता, प्रेम, लगाव, ललक या उत्सुकता शेष नहीं थी, अतः उसे यह सब नागवार गुजरता है- 'बाप! बाप! बाप! पिंकी को लगा कि ये बात सुनते-सुनते उसके कानों के परदे फट जायेंगे। बेटी के लिए बाप अगर इतना जरूरी था तो उसकी कोई ढंग की तस्वीर तो मन में रहने दी होती। उसने तो बचपन से पिता को एक खलनायक के रूप में ही जाना है। जब भी उसका जिक्र हुआ घृणा और तिरस्कार के साथ ही हुआ है।... इस घर से पिता की हर याद, नामोनिशान झाड़ पोंछकर फेंक दिया गया है।... पिता बहुतों के नहीं होते पर उनकी मधुर यादें होती हैं।... आज जब उसे पिता शब्द से ही वितृष्णा हो गई है तो उनका आसन फिर से झाड़ पोंछ कर चमकाया जा रहा है।'[20] उसे लगता है कि यदि वह सब कुछ उसके लिए किया जा रहा है तो क्या उसकी राय का कोई महत्त्व नहीं? यही एक बहुत बड़ा यक्ष प्रश्न है कि अलग होते वक्त, फिर बच्चों के मन-मस्तिष्क में दूसरे अभिभावक के प्रति गहरी वितृष्णा भरते वक्त, फिर एकाएक समझौता करते वक्त या पुनर्विवाह करते वक्त बच्चों से पूछना, उन्हें पहले से इसके बारे में बताना तथा मानसिक व मनोवैज्ञानिक स्तर पर तैयार करना या उनकी राय लेना क्या माता-पिता कभी आवश्यक समझते हैं?

मन्नू भण्डारी के अत्यन्त प्रसिद्ध उपन्यास 'आपका बण्टी' में माता-पिता के अलगाव की समस्या के विविध पक्षों को लेते हुए बण्टी को केन्द्र में रखकर पूरा ताना-बाना बुना गया है स्वयं लेखिका के अनुसार- बंटी को समाज की एक ऐसी दिनों-दिन बढ़ती हुई 'समस्या' के रूप में देखा है जिसका कोई हल नहीं दिखाई देता है।[21] बण्टी एक भयानक सामाजिक समस्या के प्रतीक रूप में सामने खड़ा है जो भावना के स्तर पर उद्वेलित व विगलित करता है और लेखिका की दृष्टि अनायास ही उसे जन्म देने, बनाने या बिगाड़ने वाले सभी सूत्रों, स्रोतों और संदर्भों की खोज और विश्लेषण की ओर दौड़ पड़ी।[22] बंटी के मम्मी-पापा का तलाक होने वाला है और उसे 'तलाक' शब्द का मतलब भी नहीं मालूम। बंटी का दोस्त टीटू जब उसे इस बारे में बताता है तो वह बेहद अपमानित अनुभव करता है- 'बंटी भीतर ही भीतर कहीं अपमानित हो आया। ठाँय ठाँय! वह हवा में बंदूक दागने लगा।...मन में जाने कैसा गुस्सा उफ़न रहा था। उसके मम्मी-पापा की बात उसे नहीं मालूम और टीटू को मालूम।'[23] माँ शकुन का उसे विश्वासपात्र न समझने, उसकी राय न लेने तथा उसके सम्मुख कुछ भी खुलकर न बताने से, यहीं से समस्या का प्रारम्भ होता है। मम्मी उसके बार-बार पूछने पर भी जब स्वयं कुछ नहीं बताती तो चोरी छिपे वह वकील चाचा और माँ की बात सुनता है तथापि उसके मन में अपराध बोध व द्वन्द्व है- 'कुछ बड़ा काम कर डालने का संतोष भी मन में था और कुछ बुरा काम करने का डर भी। पर नहीं, मम्मी का

www.ignited.in

दुख दूर करने के लिए शायद सभी को सभी तरह के काम करने पड़ते हैं।'[24]

दस वर्ष के वैवाहिक जीवन की तलाक के साथ समाप्ति हो जाती है आरंभ में शकुन बण्टी को अपने और अजय के टूटते संबंधों में 'सेतु' के रूप में देखती है, फिर पति के रिक्त हुए स्थान में बण्टी को भरना चाहती है परन्तु जब यह अनुभव करती है कि अजय उसके बिना भी खुश है, संतुष्ट है और विवाह कर लिया है तो वह बण्टी को एक 'अस्त्र' के रूप में देखती है जिसका प्रयोग वह अजय से प्रतिशोध लेने के लिए करेगी- 'अजय बंटी को बहुत प्यार करता है, पर अब से वह बंटी को मिलने भी नहीं देगी। बंटी से न मिल पाने की वजह से अजय को जो यातना होगी उसकी कल्पना मात्र से उसे एक क्रूर सा संतोष मिलने लगा।...बंटी केवल उसका बेटा ही नहीं, वह हथियार भी है, जिससे वह अजय को टारचर कर सकती है, करेगी।[25]

यानि इस सम्पूर्ण संदर्भ में शकुन ने कहीं भी बंटी को बंटी के रूप में नहीं देखा। उसकी कोई अस्मिता स्वतंत्र व्यक्तित्व है, भावनाएँ व संवेदनाएँ हैं इस पर ध्यान नहीं दिया। यही नहीं बंटी एक जीवित इकाई के बजाय 'जड़' पदार्थ बनकर रह गया क्योंकि जिस प्रकार हम जड़ पदार्थों का स्थान स्वेच्छा और सुविधानुसार बदलते रहते हैं उसी तरह बच्चों को भी एक बच्चा नहीं हथियार समझना अलगाव की समस्या की एक बहुत बड़ी और भयानक त्रासदी है। 'इस पूरी स्थिति की सबसे बड़ी विडंबना ही यही है कि इन संबंधों के लिए सबसे कम जिम्मेदार और सब ओर से बेगुनाह बंटी ही इस ट्रेजेडी के त्रास को सबसे अधिक भोगता है। शकुन अजय के संबंध का तनाव और चटक बंटी की नस-नस में ही प्रतिध्वनित होती है।'[26]

शकुन के मन में यह धिक्कार और भत्र्सना तो है कि वह क्यों नहीं केवल अपने लिए जीती? क्यों सामने वाले को ही कुछ दिखाना चाहती है परन्तु वह अन्ततः अजय को दिखाने के लिए ही पुनर्विवाह का निश्चय कर लेती है।

बंटी अत्यल्पायु का होने पर भी माँ के हर दुख, हर उदासी को गहरे तक अनुभव करता है और उसके दुख से दुखी उसकी उदासी में उदास रहता है यानि बंटी के मनोजगत में वह हर स्थिति, हर स्तर पर उसके साथ शामिल है किन्तु शकुन उसे अपनी किसी भी बात या निर्णय में शामिल नहीं रखती। फलस्वरूप सब कुछ जान लेने की आतुरता और कुछ भी न जान पा सकने की विवशता के कारण बंटी आहत होता है और उसके भीतर दबा हुआ आक्रोश का लावा फूट पड़ता है। माँ के प्रति अपने कत्र्तव्य, निष्ठा और प्रेम का पालन करते हुए वह अपना बचपन, खेल कूद और पिता के लिए प्यार सब कुछ कुर्बान कर देना चाहता है किन्तु समान रूप से दोनों से जुड़ा होने के कारण खंडित निष्ठा उसकी नियति है।[27] पिता के लिए, मन में उठी किसी भी भावना के उठने पर वह उसे कुचल डालना चाहता है परन्तु- 'इन सबको कुचलने के साथ उसके भीतर जाने क्या कुचलता रहता है। तब वह अपने आप से प्रोमिस करता है कि कभी भी वह पापा की बात नहीं सोचेगा।[28]

माँ ध्रुव की कहानी सुनाती है और बताती है मन को मारना ही सबसे बड़ी तपस्या है तो वह सोचता है कि मन तो वह भी आजकल कितना मारता है, क्या वह भी तपस्या कर रहा है? पर कौन खुश होगा उसकी तपस्या से? भगवान.....पापा.....।'[29]

निश्चित रूप से बंटी का जीवन कठिन तपस्या है परन्तु उसके लिए वरदान कोई नहीं है। टीचर्स पार्टी के दिन पहली बार उसे यह अहसास होता है कि उसे अपने और माँ के बीच किसी का भी होना, कितना असहय है किन्तु माँ के जीवन में डॉ. जोशी के बढ़ते हस्तक्षेप के साथ यह दूरी बढ़ती ही चली जाती है। ज्यों-ज्यों डॉ. जोशी और शकुन की नज़दीकियाँ बढ़ती हैं बंटी के प्रति शकुन का ध्यान, समय, और उसके अधिकार कम होते चले जाते हैं। जब-जब इस ठेस से उत्पन्न तिलमिलाहट को वह बंटी में देखती है तो एक क्षण को तो स्वयं को दोषी मानती है पर दूसरे ही क्षण वह बंटी को अजय की प्रतिच्छाया के रूप में देखकर अपने को उचित ठहराती है। अपने अधिकार और माँ को यूँ छिनता देख कई जगहों पर बंटी ने प्रतिक्रिया व्यक्त की है। जैसे- कवर न चढ़ने पर उफन-उफनकर रोना, घर आए डॉ. जोशी, अमि और जोत के सामने शकुन के कहने पर भी अमि को अपने खिलौने न देने की जिद और बाद में क्रोध में अमि से हाथापाई, खिलौने फेंक देना, बगीचे में जाकर बेतहाशा बंदूक दागना। डॉ. जोशी से माँ का विवाह हो जाने के बाद भी रंगों की शीशियाँ फेंकने के प्रसंग में, पढ़ाई की मेज न स्वीकारने, डॉ. जोशी को कभी भी पापा न कहने आदि प्रसंगों में।

शकुन का 'जस्टिफिकेशन' स्वयं उसे ही संतुष्ट नहीं करता उसके मन में 'गिल्ट' है। डॉ. सुकृता यजमानी ने बहुत ही स्पष्ट और सटीक शब्दों में कहा है- 'यह असमंजस उस आधुनिका का है जो दोहरा जीवन जीने को बाध्य है। उसका चेतन वात्सल्य के गरिमामय रूप को उचित समझता है किन्तु अचेतन में सेक्स के बदलते मूल्य घुसपैठ कर चुके हैं। और इन दोनों से घिरी वह अपने नए रूप के लिए जस्टिफिकेशन खोज रही है- जिसका सबसे अधिक भयावह परिणाम मानवता के भविष्य- बालक को झेलना पड़ रहा है।'[30]

इसीलिए डॉक्टर जोशी के साहचर्य की चाहना और उत्तरोत्तर उन पर बढ़ती निर्भरता के कारण वह यह निर्णय ले लेती है कि- 'औरत कहीं की कहीं पहुँच जाए फिर भी पुरूष का साथ उसके लिए कितना जरूरी है... पर वह साथ हो, सही अर्थों में। नहीं, वह इस साथ के बीच में अब किसी बाधा को बर्दाश्त नहीं करेगी। बंटी की भी नहीं।[31] और 'बंटी उसके और अजय के बीच सेतु नहीं बन सका तो वह उसे अपने और डॉक्टर के बीच बाधा भी नहीं बनने देगी।'[32]

जब शकुन सिर्फ और सिर्फ बंटी को देखती है तो उसकी आवश्यकताओं अधिकार व उसके दुख को समझने लगती है और उसे अपना निर्णय गलत लगने लगता है पर जब वह उसे अजय के संदर्भ से जोड़कर देखती है तो बंटी उसे मात्र एक 'पदार्थ', 'हथियार' या ऐसा 'अनावश्यक तत्त्व' लगने लगता है जिसे उस पर थोप दिया गया है और जिसके कारण वह अपनी जिन्दगी शुरू नहीं कर पा रही है ऐसे में उसमें उपजी ढेर सी कटुता और क्षोभ की ज्वाला का एकमात्र शिकार बनता है-बंटी। जो शकुन एक पल के लिए भी बंटी के बिना रहने की कल्पना भी नहीं करना चाहती थी, वहीं सोचती है- 'बंटी यदि सहज ढंग से अपने को उसके और डॉक्टर के बीच में से नहीं समेट लेता है तो वह उसे अजय के पास वापस भेज देगी ताकि बंटी को दरार ही बनना है तो मीरा और अजय के बीच में बने। अजय भी तो जाने कि बच्चे को लेकर किस तरह की यातना से गुजरना होता है.....कि पुरानी स्लेट इतनी जल्दी और इतनी आसानी से साफ नहीं होती।'[33]

दूसरी ओर बंटी को नया परिवार, नया परिवेश एक क्षण के लिए भी अच्छा न लगा। उल्टे लगातार उपेक्षा, अपमान व तिरस्कार से त्रस्त एवं अपने 'फालतू' होते जाने से तीव्र से तीव्रतम होते एहसास के कारण बंटी भी जैसे माँ के विरूद्ध मोर्चा ठान लेता है कि वह भी वही सब कुछ करेगा जिससे माँ दुखी हों परेशान हों- 'यहाँ आकर जाने कैसे ममी की परेशानी और दुख के साथ उसका संतोष और सुख जुड़ गया है। एक बदला............।'[34] जितनी बार बंटी का अंह आहत हुआ उसने भी कुछ ऐसा करके शकुन से प्रतिशोध लेना चाहा कि वह दुखी हो, आहत हो किन्तु माँ को आहत करने के लिए उसने जो-जो निर्णय लिए वे उसे ही छलनी-छलनी करते चले गए। बंटी ने निश्चय कर लिया कि वह पापा के पास चला जाएगा। उसके अन्तर्मन में यह तीव्र इच्छा थी कि माँ रोएगी उसे कुछ भी करके रोक लेगी, न जाने देगी किन्तु न माँ रोई न उसे रोका- 'उसने एक बार भी नहीं कहा कि बंटी तू मत जा तो बंटी खुद रो पड़ा। छिपकर बाथरूम में।'[35] और माँ की दी किसी भी चीज को हाथ लगाए बिना वह चला गया। बंटी के जाने के बाद एक बार फिर शकुन इस सम्पूर्ण प्रसंग पर गहनता से विचार करती है। उसका मन जानता है और धिक्कारता भी है कि नए परिवेश व परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित करने के लिए बंटी के विश्वास और प्रेम को जीतने की अतीव आवश्यकता थी वह पूरी न हो सकी बल्कि- 'उस दिन डॉक्टर अकेले बंटी को लेकर लंबी ड्राइव पर जाने वाले थे। उसे समझने और समझाने के लिए। प्यार से उसके मन में नया विश्वास जगाने, एक अपनापन.......उस दिन वह नहीं हो सका और इसलिए आज यह हो रहा है।'[36] उस दिन वायदा करके भी डॉक्टर के न आने पर बंटी के मन में जो टूट गया वो कभी भी न जुड़ सका और यह सब दलीलें देकर शकुन ने अपने को समझा लिया कि-

'जैसे वह एक अनावश्यक प्रसंग था, ऊपर से थोपा और एक न एक दिन समाप्त होना ही था। सब लोग जैसे इसी दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे। वह भी? सचमुच वह भी यही चाहने लगी थी। उसे खुद लगने लगा था। वह एक अनावश्यक तत्व............शायद वह हो ही गया था। शायद ऐसा ही होता है।'[37]

शकुन के 'जस्टिफिकेशन' और 'कन्फेशंस' को यद्यपि विभिन्न आलोचकों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से देखा परखा और व्याख्यायित किया है तथापि मेरी दृष्टि में शकुन के माध्यम से लेखिका ने बिल्कुल निष्पक्ष और असंग होकर इस स्थिति के कारणों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। एक स्त्री और एक माँ के बीच के अन्तद्र्वन्द्व में झूलती हुई शकुन की सारी कमजोरियों और उसके मन के अत्यन्त जटिलता से बुने रेशों को बड़े सधे हाथों से अलग-अलग किया है। कदाचित इसी कारण वह पूर्णतः तटस्थ होकर यह निष्कर्ष निकालती है- 'सच हम लोग शायद बंटी को मात्र एक साधन ही समझते रहे। अपने-अपने अहं, अपनी-अपनी महत्वाकांक्षाओं और अपनी-अपनी कुंठाओं के संदर्भ में ही सोचते रहे। बंटी के संदर्भ में कभी सोचा ही नहीं।[38]

माँ को अपनी कद्र बताने के लिए प्रतिशोध का भाव लेकर बंटी पापा के पास चला तो जाता है किन्तु उसे स्पष्टतः महसूस होता है कि पापा उससे बहुत दूर हैं। अजय (पिता), मीरा (नई माँ) और चीनू (उनके नवजात शिशु) की नवीन इकाइयों से निर्मित इस परिवार में भी बंटी को अपना अस्तित्व व्यर्थ ही लगता है। पिता भी उसे समझने, समझाने के बजाय होस्टल भेजने पर अड़े हुए हैं। किन्तु इस बार बंटी में अपने 'फालतू' या 'व्यर्थ' होने के एहसास के साथ विद्रोह व आक्रोश के विस्फोट के बजाय ठीक विपरीत प्रतिक्रिया होती है मूक हो जाने, सिमटने, सकुचाने की जिसका एक बड़ा कारण यह है कि माँ पर तो वह अधिकार भी समझता था किन्तु पिता पर

www.ignited.in

तो वह भी नहीं- '...... तो पापा उसे सचमुच हॉस्टल भेज देंगे। हॉस्टल भेजने के लिए ही यहाँ लाए हैं? सन्नाटा और ज्यादा गहरा हो गया। बंटी ने अपने दोनों पैर सिकोड़कर पेट से सटा लिए और दोनों हथेलियों को जाँघों के बीच दबोचकर अपने को पूरी तरह समेट लिया।'[39]

इस उपन्यास की अन्तिम पंक्तियाँ भी बंटी के ढेर-ढेर आँसुओं से तर-बतर हैं। हॉस्टल जाने के लिए उसे खड़ा करते समय वह स्वयं को रोक न सका- 'पता नहीं क्या हुआ कि इतनी देर से मन पर रखा हुआ पत्थर जैसे एकाएक ही दरक गया और ढेर ढेर आँसू उफन आए। भीतर की आँखों में ही नहीं बाहर की आँखों में भी।'[40]

इसी प्रकार अलगाव के पश्चात बच्चों पर कितना भयानक दुष्प्रभाव पड़ता है यह तथ्य 'गेरूवे की आत्महत्या' नामक कहानी में उजागर किया गया है। अम्बर नामक एक बच्चा जो अब संन्यासी बन चुका है वह अपने विगत जीवन के बारे में सोचता है- 'एक दिन मैंने देखा माँ बहुत खुश है। कारण पापा के साथ उनको तलाक की कोर्ट से मंजूरी मिल गई है। दोनों ही दंपत्ति ऐसा खुश थे मानो तलाक में पहल करने वाले वे झंडाधारी मुक्ति योद्धा थे..........दोनों अपने को इतना बहादुर समझने लगे कि एक ही छत के नीचे मुझे साक्षी रखकर अपने नारी व पुरूष दोस्तों से मिलते-जुलते रहे।'[41] इन सबके फलस्वरूप बच्चे में असुरक्षा की भावना के साथ-साथ आक्रोश पनपने लगा था- 'उनका जीवन एक विकृतिमय सपना था पर उनसे कटकर भी मैं अपने को सदा असुरक्षित पाता था। मैं आवेश और बदले की आग में जलता रहा। नींद में अपने को स्टोनमैन समझता। पेड़-पौधों को चाकू भोंक देना, नदी वृक्ष में बड़े-बड़े पत्थर मारना, इसी में आनंद पाता था। जबकि दूसरे बच्चे आपस में गेंद खेलते वहीं मैं विध्वंसकारी खेल खेलता और जंगलों में पशु-पक्षियों, पेड़, पौधों पर अत्याचार करता फिरता था।...मैं तो दोनों से नफरत करने लगा था।[42] और वह एक दिन आत्महत्या करके अपनी जीवन लीला समाप्त कर लेता है। अधिकांशतः अलगाव के पश्चात जो बच्चे माँ के पास रहते हैं माँएं उनके प्रति अति संरक्षणात्क रवैया रखती हैं जिसके कारण उनका समुचित व स्वतंत्र विकास अवरूद्ध होता है तथा उनमें पराश्रितता व परावलम्बन की भावना इतनी बढ़ जाती है कि फिर वे माँ के सिवाय अपने अस्तित्व की कल्पना ही नहीं कर पाता, न ही उस पर किसी दूसरे के अधिकार को सहन कर सकता है। जैसे- 'अपने पार' नामक कहानी में माँ के साथ रहने वाला बच्चा शिशुओं के समान हरकतें करता है, तुतलाता है, माँ की साड़ी पकड़े-पकड़े इधर-उधर घूमता है उसके कोई दोस्त नहीं हैं।[43]

इसी प्रकार 'एक और जिन्दगी' नामक कहानी में भी बच्चा साफ बोल पाने में समर्थ होने पर भी सिर्फ इसलिए तुतलाता है, क्योंकि ऐसे ही माँ को पसंद है। जब एक बार वह बच्चा अपने पिता से मिलता है तो कहता है- "ममी तो ऐछे ही अच्छा लदता है।" बच्चे ने कहा। "क्यों।" "मेले तो नहीं पता। तुम ममी छे पूछ लेना।...मैं सचमुच बड़ा हूँ न पापा?" बच्चा ताली बजाते हुए बोला "तुम वह बात भी ममी से कह देना। वह कहती है कि मैं अभी बहुत छोटा हूँ।"[44]

ठीक इसके विपरीत अधिकांशतः पिता के साथ रहने वाले बच्चों को पिता आत्मनिर्भर बनाने के प्रयास में उनके प्रति इतना अधिक उदासीनता पूर्ण रवैया अपना लेते हैं कि अक्सर वह स्नेह तथा संबंध सूत्र ही टूटने लगता है जो अभिभावकों से बच्चों को जोड़े रखता है फलस्वरूप ऐसे अभिभावकों का अस्तित्व बच्चे के लिए अपरिचय एवं असम्बद्धता से युक्त हो जाता है, जैसे 'उत्तर' नामक कहानी में दर्शाया गया है कि पत्नी से अलगाव के पश्चात बेटे को साथ रखकर पिता ने यह निश्चय किया कि कभी अपने बेटे को सम्मुख कमजोर नहीं पड़ूँगा। माँ की तरह उसके प्रति ममता या चिन्ता नहीं प्रकट करूँगा न ही निर्भर बनने दूँगा ताकि भूलकर भी उसे कभी माँ की याद न आए किन्तु इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि राजू की आत्मकेन्द्रिता इतनी बढ़ती चली गई कि उसके लिए अति कष्टप्रद एवं पीड़ाप्रद हो उठी। पिता स्वीकारता है कि- 'मुझे कई बार लगा कि हम दोनों अलग-अलग अकेले हैं। हम दोनों में कोई रिश्ता नहीं है।'[45]

माता-पिता के झगड़ों से उस साढ़े तीन वर्ष के बालक ने जिद पूरी न होने पर दीवार पर सिर फोड़ लेना, 'तलाक', 'खुदकुशी', 'आत्महत्या' जैसे शब्दों का बड़ी सहजता से प्रयोग करना सीख लिया है यहाँ तक कि वह अपने अभिभावकों से भी कई कदम आगे निकल चुका है उसके व्यवहार में आ रहे परिवर्तन को देखकर पिता हक्का-बक्का रह जाता है- 'राजू की मुस्कान पर हमारे पैरों के निशान थे। वे दूर से नहीं दिखाई देते गौर से देखो तो जुगनू की तरह चमकने लगते हैं।'[46] किसी से भी आत्मीय संबंध न बनाना शीघ्रातिशीघ्र उन्हें निर्ममतापूर्वक तोड़ देना, यहाँ तक कि उसकी यादें भी मन-मस्तिष्क से धो पोंछ डालना, यह स्वभाव व कुसंस्कार उसे विरासत में अपने अभिभावकों से मिले।

एक अन्य कहानी 'वह दूसरा' में अलगाव की समस्या से संबंधित एक सर्वथा भिन्न पक्ष पर प्रकाश डाला गया है कि- यदि बच्चे अपने माता-पिता में से किसी को खो देने के बाद स्वयं किसी व्यक्ति से सच्चा प्रेम, अपनत्व और वात्सल्य पाकर उन्हें हृदय से अपनी माता या पिता माने लें तब वे

www.ignited.in

समायोजन की समस्या से ग्रस्त नहीं होते किन्तु अधिकतर ऐसे मामलों में माता-पिता अपने लिए दूसरी पत्नी या पति लाना चाहते हैं बच्चे के लिए माँ या पिता नहीं। इस कहानी में पितृविहीना बच्ची कनु को श्रीकृष्ण अंकल से निश्छल प्यार, वात्सल्य और इतनी ममता प्राप्त होती है कि वह उसे हृदय से पिता का दर्जा दे देती है किन्तु उसकी माँ किसी और से विवाह कर लेती है। इस व्यक्ति को कनु से कोई लगाव न था, जिसके कारण माँ को तो सहारा मिल गया पर बच्ची बेसहारा रह गई।[47]

अलगाव के पश्चात बच्चों के लिए सर्वाधिक पीड़ादायक स्थितियाँ नवीन परिस्थितियों से असामंजस्य होने के कारण उत्पन्न होती जाती हैं। जैसे 'पहचान' नामक कहानी में शिवजीत नामक बच्चा जो पहले शिवजीत सचदेव था, कक्षा में अब अपना नाम शिवजीत अबरोल सुनकर बेहद लज्जा व ग्लानि का अनुभव करता है- 'वह जानता था कि उसे इसी नाम से बुलाया जाएगा मगर उस वक्त उसे कुछ ऐसा लगा था जैसी भरी क्लास में उसकी नेकर उतारकर उसे नंगा खड़ा कर दिया गया हो।'[48]

माँ जब-तब अकेले में उससे पूछती रहती है कि वह इस परिवार में घुलता-मिलता क्यों नहीं तो वह चुपचाप रहता है क्योंकि- 'सुखदेव अबरोल उससे तीन साल बड़ा है...जब भी वह उसे अकेला पाता है, उसे घूरकर देखता है। बाकी तीनों- मीना, नीना, बसंत उससे अलग-थलग बड़े भाई से खुसर पुसर बातें करते हैं, साथ खेलने के लिए बुलाते हैं जैसे किसी मेहमान को साथ खाना खाने के लिए कह रहे हों। वह चाहे भी तो उनसे घुलमिल नहीं सकता। और वह चाहता भी नहीं।'[49] उपेक्षा का निरन्तर सामना करते समय वह अब 'किंकत्र्तव्यविमूढ़ता' और 'जड़ता' की ओर बढ़ता जा रहा है।

इसी प्रकार 'एक और जिंदगी' नामक कहानी में भी कोर्ट में अभिभावकों द्वारा तलाक के कागजात पर हस्ताक्षर करते समय चिड़िया के बच्चे के पंखे से कट जाने के प्रतीक के माध्यम से उस बच्चे की आगामी दुर्दशा का स्पष्ट संकेत मिलता है- 'कोर्ट में हस्ताक्षर करते समय छत के पंखे से टकराकर एक चिड़िया का बच्चा नीचे गिरा।..पंखे ने इसे काट नहीं दिया।'' ''काट दिया होता तो बल्कि अच्छा था। अब इस तरह लुंज पंखों से बेचारा क्या जिएगा।'' [50]

कहीं-कहीं तो बच्चों के लिए स्थितियाँ इतनी त्रासदायक हो जाती हैं कि उन्हें न ही नए परिवार में स्वीकृति मिलती है, न मान सम्मान और प्यार बल्कि उन्हें प्रताड़ित किया जाता है। जैसे 'ताशमहल' नामक कहानी में दर्शाया गया है कि एक विधवा स्त्री शोभना से विवाह करके पहले तो निशीथ यहाँ तक स्वीकार कर लेता है कि वह कोई और संतान ही नहीं चाहेगा किन्तु अपने बच्चे के जन्म के बाद वह बच्चू से नफरत करने लगता है, बीमारी की हालत में भी वह बच्चू को उठाकर निर्ममतापूर्वक यह कहकर पटक देता है कि- 'यह मेरी आँखों में प्रतिक्षण किरच सा करकता रहता है।'[51] कारण यह बताता है कि वह बच्चू में साक्षात शोभना के पूर्व पति का प्रतिबिम्ब देखता है और उसे यह कतई बर्दाश्त नहीं कि शोभना उसके रूप में अभी भी अपने पूर्व पति को ही हृदय में बसाए रखे। अन्ततः अपने बच्चे के हित में शोभना यह निर्णय लेती है कि वह बच्चू को लेकर अन्यत्र कहीं चली जाएगी।

वहीं 'कड़ियाँ' नामक उपन्यास में पिता महेन्द्र के विवाहेतर संबंधों के कारण अलगाव के बाद उनके बेटे पप्पू को किसी दूसरे पिता या दूसरी माता का तो सामना नहीं करना पड़ता किन्तु अलगाव से पूर्व ही अभिभावकों के बीच होने वाले झगड़ों के नैरन्तर्य ने घर के वातावरण को इतना अलाभकारी व प्रदूषित बना दिया है कि वह व्यवहार एवं सामंजस्य की अनेक समस्याओं से ग्रस्त होता चला जाता है। वह अक्सर सहमा-सहमा रहता है, आँखें मिचमिचाता है, बिस्तर भिगोता है। उस पर पप्पू की समस्याओं को सुलझाने के बजाय महेन्द्र ने उसे हॉस्टल में भर्ती करा दिया है किन्तु वहाँ भी वह व्यवहार संबंधी समस्याओं जैसे अलग-थलग रहना, शर्मीलापन, मूक बने रहना आदि से मुक्त नहीं हो पाता। पिता के आने की सूचना मात्र से उसके अन्दर भूचाल सा उठने लगा, हृदय फटने लगा। हॉस्टल में दाखिल हुए छः महीने व्यतीत होने के बाद भी न ही वह स्कूल का रहन-सहन सीख पाया था, न वह अपने पुराने संस्कार ही छोड़ पाया था।[52] 'मम्मी पापा दोनों चाहिए (क्षमा शर्मा), 'एक काली एक सफेद' (चित्रा मुद्गल) आदि कहानियों तथा 'तीसरी सत्ता' (गिरिराज किशोर), 'यह भी नहीं' (महीप सिंह), आदि उपन्यासों में भी इसी समस्या पर प्रकाश डाला गया है।

समग्र रूप से देखा जाए तो अलगाव के पश्चात बच्चों में व्याकुलता, बेचैनी, निराशा, अवसाद, आक्रोश, अनिद्रा, दिवास्वप्न, दुःस्वप्न, बिस्तर भिगोने, हीनत्व बोध, अलग-थलग रहने, कुंठा तथा मानसिक विचलन जैसी गंभीर समस्याएँ दिखाई पड़ती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. चाइल्ड डेवलपमेंट: ए0 हार्लाक, पृ0 519

www.ignited.in

2. 'समाजशास्त्र: एक विधिवत विवेचन': हेरी0 एम0 जॉनसन, पृ0 171
3. बाल-व्यवहार व्यतिक्रम: डॉ. श्याम बिहारी सिंह, पृ0 22
4. करारपत्र: उषादेवी विजय कोल्हटकर, पृ0 49-50
5. वही, पृ0 52
6. एक पुस्तक माता-पिता के लिए: अन्तोन माकारेंको, पृ0 140
7. दिलासा: उषा देवी विजय कोल्हटकर, पृ0 135-136
8. वही, पृ0 136
9. ऑक्टोपस: कृष्णा अग्निहोत्री, पृ0 83
10. ऑक्टोपस: कृष्णा अग्निहोत्री, पृ0 83
11. मेरे दोस्त का बेटा: कृष्णचन्दर, पृ0 39
12. मेरे दोस्त का बेटा: कृष्णचन्दर, पृ0 40
13. 'समाजशास्त्र: एक विधिवत विवेचन': हेरी एम0 जॉनसन, अनुवादक-योगेश अटल, पृ0 171-172
14. पीर पर्वत हो गई: मालती जोशी, पृ0 103
15. हथेली भर सुख : यामिनी वर्मा, पृ0 68
16. वही, पृ0 71
17. एक दिन का मेहमान: निर्मल वर्मा, पृ0 163
18. वही, पृ0 167
19. नीड़ का निर्माण फिर फिर: मालती जोशी, पृ0 15-16
20. नीड़ का निर्माण फिर फिर: मालती जोशी, पृ0 19
21. आपका बण्टी (जन्मपत्री बण्टी की): मन्नू भण्डारी, पृ0 4
22. आपका बण्टी: मन्नू भण्डारी, पृ0 13-14
23. वही, पृ0 25
24. वही, पृ0 25
25. आपका बण्टी: मन्नू भण्डारी, पृ0 41
26. वही, पृ0 6
27. आपका बण्टी (वक्तव्य): मन्नू भण्डारी, पृ0 5
28. वही, पृ0 67
29. वही, पृ0 69
30. प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यासों में बाल मनोविज्ञान: सुकृता यजमानी, पृ0 180
31. आपका बंटी: मन्नू भंडारी, पृ0 104
32. वही, पृ0 106
33. आपका बंटी: मन्नू भंडारी, पृ0 104
34. वही, पृ0 145
35. वही, पृ0 164
36. आपका बंटी: मन्नू भंडारी, पृ0 179
37. वही, पृ0 172
38. वही, पृ0 180
39. आपका बंटी: मन्नू भंडारी, पृ0 197
40. वही, पृ0 200
41. गेरूवे की आत्महत्या: जलज भादुड़ी, पृ0 63
42. गेरूवे की आत्महत्या: जलज भादुड़ी, पृ0 64
43. अपने पार: राजेन्द्र यादव, पृ0 20
44. एक और जिन्दगी: शिव प्रसाद सिंह, पृ0 286
45. उत्तर: रमेश बक्षी, पृ0 401
46. वही, पृ0 408
47. वह दूसरा: अमृता प्रीतम, पृ0 198
48. पहचान: शिव प्रसाद सिंह, पृ0 270
49. वही, पृ0 273

50. एक और जिंदगी: शिव प्रसाद सिंह, पृ0 279

51. ताशमहल: चित्रा मुद्गल, पृ0 127

52. कड़ियाँ: भीष्म साहनी, पृ0 179

Corresponding Author

Dr. Sheena Prabhakaran*

Assistant Professor, Department of Hindi, St. Josephs College, Devagiri (Autonomous), Kozhikode, Kerala